INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 2 | MARCH – 2024

पर्यावरण सुरक्षा एवं वैश्विक राजनीति

ज्ञान प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)
मदन मोहन मालवीय पीजी कॉलेज भाटपार रानी, देवरिया, उ.प्र.

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पारंपरिक रूप से राज्यों के मध्य सैन्य व् सुरक्षा से सम्बंधित संबंधों का अध्ययन करता रहा है अर्थात यहाँ राज्य ही मुख्य अभिकर्ता के रूप में होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अन्तर्रष्ट्रीय राजनीति में गैर–राज्य अभिकर्ता एवं उससे जुडी समस्याएं भी मुख्य भूमिका में आने लगी। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की दिशा धीरे–धीरे गैर–पारंपरिक तथ्यों के साथ–साथ पर्यावरण राजनीति पर आधारित होती चुकी है जिसका मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को पर्यावरण विनाश से बचाना है। चूँकि वर्तमान राजनीति पर्यावरण राजनीति पर आधारित होती जा रही है इसलिए इसे हरित राजनीति की भी संज्ञा दी जा रही है।

पर्यावरण क्षय की समस्या 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों से चली आ रही है लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात पर्यावरण राजनीति पर बलपूर्वक ध्यान दिया जाने लगा। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात या 1960के दशक में जब विश्व पर्यावरण क्षय तेजी से बढ़ने लगा तो वैश्विक समुदाय ने पर्यावरण राजनीति पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। औद्दोगीकरण के बढ़ने के कारण धीरे–धीरे कृषि भूमि प्रभावित होने लगी। जल प्रदूषण बढ़ना, पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि, पर्यावरण असंतुलन की बढती स्थिति ने वैश्विक समुदाय को इस समस्या के निदान हेतु एक साथ लाकर खड़ा कर दिया है। 1970 के दशक में पर्यावरण क्षय के कारण वैश्विक समुदाय की चिंताए लगातार बढ़ने लगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में पर्यावरण क्षय एवं सतत विकास पर सन 1972 में स्टाकहोम में एक सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।[1] इसमें विश्व समुदाय ने यू. एन.ई.पी. का निर्माण किया, जो वर्तमान में एक प्रमुख पर्यावरण एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है।

जैव विविधता, ग्लोबल वार्मिंग, सतत विकास आदि वर्तमान में वैश्विक समुदाय के एक ज्वलंत विषय बना हुआ है। इस पर वार्ता का दौर आरंभ होने के साथ–साथ ही पर्यावरण सुरक्षा पर उत्तर–दक्षिण विवाद भी आरम्भ हो गया। मुख्य रूप से इन दोनों गुटों के मध्य इस बात को लेकर विवाद बढ़ता ही रहा है कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरण क्षय के लिए कौन से देश अधिक जिम्मेदार हैं, जिससे पर्यावरण असंतुलन की स्थिति बनी है। वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग, समुद्रों में आने वाले तूफान, समुद्री जल स्तर का बढ़ना, मौसम आपदा आदि का मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन बनता जा रहा है।

सन 1992 से लेकर वर्तमान समय तक पर्यावरण की सुरक्षा एवं समाधान हेतु वैश्विक समुदायों के द्वारा अनेक सम्मेलन, प्रोटोकाल एवं संधियाँ की गयी है। वर्ष 1987 में ब्रांटलैंड आयोग ने विश्व पर्यावरण सुरक्षा एवं सतत विकास के नाम पर "आवर कॉमन फ्यूचर" शीर्षक नाम से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है।[2] इस रिपोर्ट का मुख्य उद्देश्य वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखा जाना है।

पर्यावरण सुरक्षा एवं सतत विकास को मूर्त रूप देने के लिए सन 1992 में रियो, ब्राजील में विश्व समुदाय के मध्य पहला पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया। पृथ्वी सम्मेलन में हुई संधियों में यह बात कही

गयी कि सभी विकसित राज्य सन 2000 तक सन 1990 के स्तर तक कार्बन का उत्सर्जन करेंगे।[3] यद्यपि इस बात पर कोई कानूनी प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। इसके साथ ही पृथ्वी सम्मेलन में एजेंडा–21 की बात कही गयी, जो सतत विकास को बढ़ावा देगी, साथ ही जैव विविधता, बढ़ते तापमान के समाधान के लिए ऐसे उपाय किये जाये जिससे पर्यावरण सुरक्षा संभव हो सके।

वर्तमान समय में पर्यावरण क्षय एवं जलवायु परिवर्तन से मानव जीवन की लगातार समस्याएँ बढती जा रही है। पृथ्वी का बढ़ता हुआ तापमान, ओजोन परत में छेद जिसके कारण अंटार्कटिका एवं अन्य ग्लेशियरों के बर्फ का लगातार पिघलते रहना, औद्योगिकरण के बढ़ने से ग्रीन हॉउस गैसों का निरंतर बढ़ना, समुद्री जलस्तर में वृद्धि आदि कुछ ऐसी पर्यवारण समस्याएं है जिनका समय रहते यदि निदान नहीं किया गया तो आने वाले समय में मानव जीवन अति भयावह होगा। एक अंतरसरकारी रिपोर्ट के अनुसार (2007)– विश्व के लगभग 30 पर्वतीय ग्लेशियर की मोटाई वर्ष 2005 में आधे मीटर से अधिक कम हो गयी है। परिणामस्वरुप 0.6 डिग्री वैश्विक तापमान में वृद्धि हुई है। पिघलते ग्लेशियर के कारण मालदीव व अन्य द्वीपीय राज्यों के उपर आज संकट मंडरा रहा है। एक तरफ निरंतर समुद्री जलस्तर बढ़ रहा है तो वही दूसरी तरफ यू.एन.ई.पी. के के द्वारा लगाये गए एक अनुमान के अनुसार पृथ्वी की एक चौथाई भाग पर मरुस्थलीकरण का खतरा बढ़ता जा रहा है। जबकि सन 1987 से अबतक कार्बन डाई ऑक्साइड लगभग 33 प्रतिशतबढ़ चुकी है।

उपरोक्त पर्यावरण समस्याओं के निदान के लिए विश्व समुदाय काफी चिंतित है और इसके लिए विश्व स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में सम्मेलन आयोजित कर रहे है। इसी क्रम में सन 1997 में ग्लोबल वार्मिंग पर जापान के क्योटो में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया गया। 'विश्व पर्यावरण एवं ग्रीन हॉउस गैस सम्मेलन' के नाम से चर्चित इस सम्मलेन में ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार ग्रीन हॉउस गैसों को कम करने की बात कही गयी। क्योटो प्रोटोकाल को सन 2005 से लागू कर दिया गया है किन्तु कुछ देशों द्वारा अभी तक इस संधि की संपुष्टि प्रदान नहीं की गई है। इस संधि में औद्योगिक देशों को अगले दस वर्ष में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा को पांच प्रतिशत के स्तर से नीचे लाना है। अमेरिका इन गैसों को उत्सर्जित करने में एक बड़ा हिस्सा निभाता है, किन्तु सन 2001 में राष्ट्रपति जार्ज बुश ने कहा– वह कभी भी इस संधि को नहीं मानते हैं और न ही कभी हस्ताक्षर करेगें।

वास्तव में अगर देखा जाये तो अमेरिका के इस निर्णय के पीछे उत्तर–दक्षिण विवाद रहा है और पृथ्वी सम्मेलन के पश्चात उत्तर–दक्षिण विवाद और बढ़ता चला गया। पर्यावरण की रोकथाम के लिए होने वाले सम्मेलनों में विश्व समुदाय दो गुटों में बंट गया। एक उत्तर गुट–इसमें विकसित देश सम्मिलित हैं तथा दूसरा दक्षिण गुट–इसमें एशिया, अफ्रीका, एवं लैटिन अमेरिका के गरीब एवं विकासशील देश सम्मिलित है। ये दोनों गुट प्रारम्भ से ही पर्यावरण असंतुलन के लिए एक दूसरे पर आरोप लगाते रहें हैं। एक तरफ दक्षिणी गुट का यह मानना है कि विकसित देश ने अपने विकास एवं समृद्धि के लिए पर्यावरण का असंतुलित रूप से दोहन किया है। दूसरी तरफ उत्तरी गुट का मानना है कि. दक्षिणी गुट के देश अपने विकास को प्राप्त करने के लिए वर्तमान में प्राकृतिक संसाधनों का बेहिसाब रूप से दोहन कर रहे है, जिनसे पर्यावरण असंतुलन की स्थित पैदा हुई है। दोनों गुटों के मध्य यह विवाद अभी भी चल रहा है और न ही किसी निर्णय पर अभी तक विश्व समुदाय के मध्य अभी तक आम सहमति बन पाई है।

ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन पर बढ़ रही वैश्विक चिंताओं ने वार्षिक स्तर पर वैश्विक सम्मेलन का आयोजन आरंभ किया, जिसका पहला सम्मेलन सन 1995 में जर्मनी के बर्लिन शहर में हुआ। इस सम्मेलन के पश्चात् वार्षिक स्तर पर जलवायु परिवर्तन पर इस सम्मेलन का आयोजन किया जाता रहा है, जिसे "COP & CONFERENCES of PARTIES" के नाम से जाना जाता है। सन 2022 में शर्म–अल–शेख में COP - 27 का आयोजन किया गया। अब तक इस क्रम में निम्नलिखित सम्मेलन आयोजित किये जा चुके है–

स्रोत : इन्टरनेट

क्र0सं0	सत्र	वर्ष	स्थान	क्र0सं0	सत्र	वर्ष	स्थान
1.	COP-1	1995	बर्लिन, जर्मनी	16.	COP-15	2009	कोपेन हेगन, डेनमार्क
2.	COP-2	1996	जिनेवा	17.	COP-16	2010	कानकुन, मैक्सिको
3.	COP-3	1997	क्योटो, जापान	18.	COP-17	2011	डरबन, दक्षिण अफ्रीका
4.	COP-4	1998	ब्यूनसआयर्स, अर्जेंटीना	19.	COP-18	2012	दोहा, कतर
5.	COP-5	1999	बॉन, जर्मनी	20.	COP-19	2013	वर्सावि, पोलैंड
6.	COP-6	2000	हेग, नीदरलैंड	21.	COP-20	2014	लीमा, पेरु
7.	COP-6.2	2001	बॉन, जर्मनी	22.	COP-21	2015	पेरिस, फ्रांस
8.	COP-7	2001	मोरोक्को	23.	COP-22	2016	मारकेश, मोरोक्को
9.	COP-8	2002	नई दिल्ली	24.	COP-23	2017	बॉन, जर्मनी
10.	COP-9	2003	मिलान, इटली	25.	COP-24	2018	कोटवूइस, पोलैंड
11.	COP-10	2004	ब्यूनसआयर्स, अर्जेंटीना	26.	COP-25	2019	मैड्रिड, स्पेन
12.	COP-11	2005	मांट्रियल, कनाडा	27.	COP-26	2021	ग्लासगो
13.	COP-12	2006	नौरोबी, केन्या	28.	COP-27	2022	शर्म–अल–शेख
14.	COP-13	2007	बाली, इंडोनेशिया	29.	COP-28	2023	यू0ए0ई0 (होना है)
15.	COP-14	2008	पोजान, पोलैंड				

अबतक हुए इन सभी सम्मेलनों में सन 2009, 2012, 2014, में आयोजित हुए सम्मेलन महत्वपूर्ण रहें है। संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित COP–21–(2015) जिसे पेरिस में आयोजित किया गया अपने आप में ऐतिहासिक रहा है , इस सम्मेलन में विश्व समुदाय के मध्य एक समझौता किया गया जिसे पेरिस समझौते के नाम से जान जाता है।[4] इस समझौते पर अभी तक लगभग 194 देशों में अपनी सहमति व्यक्त की है। इस समझौते के अंतर्गत विश्व समुदाय ने आने वाले समय में धरती का तापमान वर्तमान तापमान से 2 डिग्री सेल्सियस नीचे लाने का लक्ष्य रखा है। इसके अतिरिक्त देशों की "विभेदीकरण उत्तरदायित्व" को अपनाया गया, जिसमें विकसित देश अन्य देशों की अपेक्षा पर्यावरण सुरक्षा के लिए अधिक जिम्मेदारी उठायेगें। इसके साथ ही अन्य देशों को आर्थिक सहायता भी प्रदान करेगें। भारत द्वारा पेरिस समझौते को ऐतहासिक बताया गया है। इसमें प्रत्येक देश के लिए यह निर्धारित किया गया है कि वह प्रति पांच वर्ष बाद "राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित" (NDC) को अपडेट करेंगे। एन0डी0सी0 के अंतर्गत भारत ने अगस्त 2022 में अपनी एनडीसी रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र संघ के UNFCCC के सम्मुख प्रस्तुत की है।[5] इस रिपोर्ट में 2030 तक ग्रीन हॉउस गैसों तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी करने के भारतीय लक्ष्यों को निर्धारित किया गया है। भारत ने 2030 तक अपनी जीडीपी का 45 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन की तीव्रता को सन् 2005 के स्तर से कम करने में करेगा। भारत की जलवायु परिवर्तन पर यह एनडीसी रिपोर्ट UNFCCC तथा पेरिस समझौते के प्रति भारतीय प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है, साथ ही सन 2070 तक नेट–शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य के तरफ भारत का यह एक और कदम है।

अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सन 2016 में ग्रीन हॉउस गैसों को कम करने के लिए तीन बिलियन डॉलर के योगदान की बात कही, जिसे 2020 तक सौ बिलियन डॉलर रखा गया। पेरिस समझौते को उस समय गहरा आघात पहुंचा, जब नवम्बर 2020 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका को पेरिस समझौते से बाहर कर लिया, किन्तु ज्यों बाईडेन ने राष्ट्रपति बनने के बाद अमेरिका को पेरिस समझौते में पुनः सम्मिलित कर लिया है।[6] इसके साथ ही पेरिस समझौते को वैश्विक कार्यवाही के लिए एक "अभूतपूर्व ढांचा" बताया है, जिसका उद्देश्य मानव जगत को आने वाले किसी भी पर्यावरण विनाश से बचाना है।

संयुक्त राष्ट्र के पूर्व सचिव बान की मून ने कहा है– "अगर देशों को अपना हित करना है तो उन्हें वैश्विक हित को आगे रखना होगा। प्रकृति निरंतर हमें संकेत भेज रही है, मानव जीवन जितना आज भयभीत है उतना पहले कभी नहीं रहा है। हमें अपने घर को बचाने के साथ–साथ सम्हालना भी है।"[7] वहीं तत्कालीन फ्रांस के राष्ट्रपति ने पेरिस समझौते को पर्यावरण सुरक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व के लिए स्वविकार्य बताया है।

वर्तमान में लगभग हर एक देश अपनी एनडीसी रिपोर्ट UNFCCC के सम्मुख रख रहें है। चीन, यूरोपीय संघ एवं अन्य प्रमुख कार्बन उत्सर्जक देश पेरिस समझौते को लेकर जलवायु परिवर्तन पर अपनी प्रतिबद्धताओं को आगे बढ़ा रहें है। चीन ने संयुक्त राष्ट्र की 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह के दौरान सन 2060 तक नेट–जीरो कार्बन उत्सर्जन को प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। जापान ने इस बात की घोषणा करी है कि वह सन 2050 तक कार्बन तटस्था प्राप्त करने के लिए यूरोपीय संघ के साथ गठबंधन करेगा। इसके साथ ही दक्षिण कोरिया व अन्य राज्यों ने पेरिस समझौते के प्रति अपनी प्रतिबद्धताएं व्यक्त की हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिए विद्यमान उत्तर–दक्षिण विवाद पेरिस समझौते के बाद भी बना रहा है और अमेरिका द्वारा पेरिस समझौते से स्वयं को एक बार बाहर करना इस तथ्य को दर्शाता है। यद्यपि भारत द्वारा लगातार की जा रही मांग "साझा लेकिन विविध जिम्मेदारी" को पेरिस समझौते में स्थान दिया गया। इसके साथ ही सतत विकास को बढ़ावा दिया गया है।

इस सबके होने के बाद भी आज वैश्विक समुदाय के मध्य पर्यावरण सुरक्षा के लिए कोई आम सहमति नहीं बन पाई है। कार्बन उत्सर्जन एवं ग्रीन हॉउस गैसे विकास की इस अंधाधुंध दौड़ में लगातार जारी है, जिसमें विकसित देश दक्षिणी गुट पर यह आरोप अभी भी लगा रहें है कि कार्बन उत्सर्जन में ये देश आगे हैं जबकि दक्षिणी गुट का यह कहना है कि विकसित देशों ने पर्यावरण का अंधाधुंध दोहन कर पर्यावरण असंतुलन की स्थिति पैदा की है। इसलिए विकसित देश इसके लिए अधिक जिम्मेदार हैं।

वैश्विक समुदाय के मध्य इसको लेकर जो भी विवाद हो किन्तु सभी देश आज इस बात पर एकमत हैं कि मानव जीवन को पर्यावरण विनाश से बचाने के लिए पर्यावरण सुरक्षा अति आवश्यक है और पर्यावरण विनाश से मानव जीवन को बचाने के लिए आज पूरा विश्व समुदाय प्रतिबद्ध है। UNFCCC के माध्यम से लगातार देशों के मध्य आपसी सहयोग प्राप्त करने पर बल दिया जा रहा है क्योंकि पर्यावरण संबंधी प्रतिमान एवं अंतर्राष्ट्रीय कानून वर्तमान विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता बनती जा रही है।

स्टाकहोम सम्मेलन के पश्चात पर्यावरण सुरक्षा की बात विश्व समुदाय द्वारा प्रारम्भ की गयी जो पृथ्वी सम्मेलन, क्योटो प्रोटोकाल से होते हुए पेरिस समझौते के बाद COP–27 तक आई है। वर्तमान में प्रतिवर्ष COP का आयोजन किया जा रहा है जिसमें विश्व समुदाय पर्यावरण को संतुलित करने एवं इसकी सुरक्षा को लेकर अपनी प्रतिबद्धताओं को व्यक्त कर रहें हैं। आज इस बात की सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि आने वाले समय में सभी देश आपसी मतभेद भुलाकर पर्यावरण सुरक्षा को लेकर एक आम सहमति बनायेगें जिसमें वर्तमान एवं आने वाले भविष्य में पर्यावरण सुरक्षा एवं मानव विकास के गति में संतुलन बना रहे।

REFERENCES

1. *"United Nation Conference on the Human Environment"*,5-6 June 1972, Stockholm, United Nations Conference on the Human Environment, Stockholm 1972 | United Nations
2. G. McChesney, Ian, *"The Brundtland Report and Sustainable Development in New Zealand"* Paper No. 25, Centre for Resource Management Lincoln University and University of Canterbury, Feb 1991, The Brundtland report and sustainable development in New Zealand (core.ac.uk)

3. *"United Nations Conference on Environment and Development"*, Rio De Janeiro, Brazil, 3-14june 1992, United Nations Conference on Environment and Development, Rio de Janeiro, Brazil, 3-14 June 1992 | United Nations , Accessed on 30 july 2023
4. *"The Peris Agreement"*, via United Nations Climate Change, The Paris Agreement | UNFCCC , Accessed on 10 Sep. 2023
5. August 2022 Report to UNFCCC, "*India's Updated First Nationally Determined Contribution Under Paris Agreement (2021-2030)"* , Microsoft Word - V5 NDC submission to UNFCCC , Accessed on 30 July 2023
6. Mai, H.J, *"U.S. Officially Rejoins Peris Agreement on Climate Change"* NPR, 19 Feb 2021, U.S. Officially Rejoins Paris Agreement On Climate Change : NPR , Accessed on 10 Sep. 2023.
   McVeigh, Karen, *"WE Have No Time to Lose" Ban Ki-Moon Criticises Climate Finance Delays, The Guardian,* 'We have no time to lose': Ban Ki-moon criticises climate finance delays | Global development | The Guardian